International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

यमदीप उपन्यास में चित्रित किन्नर जीवन

अनुराधा दिलीप माळी
हिंदी -विभाग, शोधार्थी, शिवाजी विश्वविद्यालय , कोल्हापुर
Corresponding Author - अनुराधा दिलीप माळी
DOI - 10.5281/zenodo.10935127

प्रस्तावना :

आज की हिंदी साहित्य जगत मे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृद्ध विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदी महत्त्वपूर्ण विमर्श उभर्कर सामने आऐ। इन विमर्श के साथ ही भारतीय समाज के उन पक्षो पर विचार की आवश्यकता है जो सदियों से उपेक्षित है जीवन जी रहे हे। अब इक्कसवी सदी मे एक नये विमर्श की आवश्यकता है ,- 'थर्ड जेंडर'। हमारे समाज के दो स्तम्भ है थ पुरुष और स्त्री। लेकिन हमारे समाज मे इन दो लिंगो के अलावा भी एक अन्य प्रजाती का अस्तित्व मौजूद है। जो न पुरुष हे न। स्त्री इस विषय को लेकर हमारे समाज के घोर 'अभिशप्त 'माने जाने वाले 'किन्नर' समुदाय के अतरंग अंतरंग जीवन की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करने वाला 'यमदीप' उपन्यास नीरजा माधव द्वारा लिखित है, जो अपने - आपमें एक अद्वितीय कृती है। यह प्रकाशन सुनील साहित्य सदन , दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास को छब्बीस सोपानों में लिखा है,जिसमें से तेरा सोपानों में किन्नरों की जीवन गाथा का चित्रण देखने को मिलता है।

'यमदीप' उपन्यास भारतीय हिंदी साहित्य में किन्नरों के जीवन पर लिखा गया पहला उपन्यास माना जाता है। अपनी अनोखी कथावस्तु के कारण हा उपन्यास बहुचर्चित हुआ है। 'यमदीप' इस शब्द से भी उसका अर्थ लिया जा सकता है- 'यम' अर्थात 'नरक' और 'दीप' अर्थात 'दिया', जो दिया जलते - जलते कब बुझ जाता है इसका पता नही लग जाता उस दिये की तरह ही किन्नरों का जीवन है।

लेखिका नीरजा माधव अपने उपन्यास 'यमदीप' की भूमिका मे स्पष्ट लिखती है, "प्रकाश-पर्व की पूर्व- संध्या में दरवाजे के बाहर रात-भर टिमटिमाते उस यमदीप की भति जो उपेक्षित होते हुए भी याद याद दिलाता है अलोकित कल का ।नहीं छुटती उसके प्रदीप्त होने पर फुलझडीया और पराखे, नहीं होती पूजा- अर्चना या चढते थाल पर भोग, पर काली रात के विरोध में वह टिमटिमाता रहता हें चुपचाप,नि:शब्द ।सुखता रहता है अंतसरस बूंद - बूंद – बूंद। " 1 उस लिखान से स्पष्ट होता है कि, यमदीप उपन्यास का शीर्षक ही पाठक को कथा की मूल संवेदना से सराबोर कर देने वाला उपन्यास है । 'यमदीप' अर्थात, यम के लिए जलाया

गया दीप है। इस दीप की कोई पूजा –अर्चना, आरती, भोग कुछ नही होता। यहां तक उस दीप को रखने के बाद पलटकर भी नही देखा जाता है। ऐसा ही उपेक्षित दीप यमदीप है जो उस संध्या-काल के घनघोर अंधेरे से अकेला ही संघर्ष करते हुए दिखाई देता है। इस उपन्यास मे 'नाजबीबी' यह मुख्य पात्र है तो मुख्य कथानक है -किन्नरों की जीवन गाथा। नाजबीबी उर्फ नंदरानी भी अपने अस्तित्व के प्रति भावुक, संवेदनशील, दयालू एवं सदृढ व्यक्तीत्व की किन्नर हे। उपन्यास के प्रथम अध्याय से ही नाजबीबी की भावुक्ता की झलक देखने को मिल जाती है। एक एक पगली स्त्री थी, जो प्रस्व पीडा से तडपती होती है। तब मोहल्ले के लोग तमाशवीत बनकर देख रहे थे ।स्त्रियां अपने घरों सें छुप-छुप कर देख रही थी लेकिन उस पगली स्त्री की मद् को कोई घर से बाहर नही आता ।तब नाजबीबी अपने साथीयों के साथ वही उसका प्रस्व करती है ।लेकिन उसमे पीडा से जब उस पगली की मृत्यू हो जाती है और कोई भी उसकी पुत्री को नही अपना था तब नाजबीबी अपने साथ लेने के बारेमे सोचती है ।उसके साथी जब उस लडकी को साथ लेने के लिये मना करते है तब वह केहती है- "किसके भरोसे छोडे वह इस बच्ची को? कोई पालने को तयार नही। ऐसे छोड देने पर कही कुत्ते -कोवे नोचकर... नहीं... नहीं।"2इस प्रसंग के माध्यम से किन्नरो की भावना - मन की- ममता उनका मानवतावादी दृष्टिकोनभी पाठकों को उनके प्रति एक नई दृष्टी देता है।

उपन्यास में लेखिका ने किन्नर के जीवन पर, उनके रीति-रिवाजो आदी पर संपूर्ण प्रकाश डालते हुए उनके समाजसे के अलग –थलग रहने, ना जुड पाने से साथ उनके सामाजिक स्तर पर भी चर्चा करती हुई दिखाई देती है। हिजडों का उनका आय का मुख्य साधन मांगलिक अवसरों पर नाचना, गाना,बधाई मांगना है। और जो कुछ यजमान द्वारा मिल जाये उसकी पैसे पर उन्हे आश्रित रहना पडता हे। आज समाज के आधुनिकीकरण से इन किन्नरो पर आर्थिक संकट आ रहा है। रोजगार इन्हे कोई नही देता अंता: मजबूर मे उनको भीख,डराकर लुटना जैसे कृत्य करने पडते हैं। इसी संदर्भ में इसी संदर्भ लेखिका कहती है – "धंदे में आर-ही इस गिरावट को देखते हुऐ गिरिया रखने तक की छुट तो अब न चाहते हुऐ भी स्वीकृती पा चुकी थी उनकी बस्ती में । समलैंगिक भूख से बैचेन कोई- कोई समर्थ पुरुष जो इनका किसी के रूप मे भरण- पोषण कर सके, इसके लिए अपनी इच्छित या अनइच्छित स्वीकृति कोई भी हिजडा दे सकता था । पेट पालने की इसी विवशता में दे सकता था कितने कितने तो छिपे - मुंदे तौर पर इसे वेश्यावृत्ति तरह आपना चुके थे, क्योंकी एक तो गिरिया कम लोग बनते थे और दुसरे केवल गिरिया द्वारा दी गई सीमित धन राशि में इनका खर्च चलना मुश्किल हो जाता था । कभी-कभी ट्रेनों ओर बसो मे चढकर भी ये धन उगाही करने लगते, लेकिन ऐसे हिजडों को पता चलते ही पता चलते ही उन्हे बिराद्री से बहिष्कृत करने जैसा दंड भी गुरुजी द्वारा दे दिया, जाता क्यूंकी उनके समुदाय मे भीख मांगना, चोरी- हिंसा करना भयंकर पाप माना जाता है।"3

सामाजिक भय कारण ही परिवार पहले किन्नर बालक को विदयालय भेजे ने से बचने का प्रयास करते है इस उपन्यास में नाजबीबी के साथ होता दिखाइ देता है।

" मम्मी पहले तो स्कूल भेजने को तैयार ही नही थी परंतु पडोसियों कहने ठोकने पर उन्होंने उसका नाम राधा रमन बालिका विदयालय में कक्षा छ: में लिखवा दिया था। " 4

जनानांग दोष के साथ पैदा हुऐ बच्चे को परिवार तो क्या समाज भी स्वीकार नही करता । परिवार के लोग भी अपनी इज्जत को बचाने के लिये अपने ही बच्चे को अपनी जिंदगी, परिवार से बाहर निकाल देते है। ' यमदीप' इस उपन्यास में किन्नर पात्र नाजबीबी को जब अपने परिवार की याद आती है तो वह अपने घर पर फोन करती है, मगर बदले में उसे मानसिक पीडा ही मिलती है। " देखो तुम्हारा बार-बार टेलिफोन करना या इस परिवार से संबंध रखना, हमारी इज्जत को बढाता नही, उलटे तुम्हे भी दु:ख होता है और मम्मी - पापा को भी। तुम परिवार में रह नही सकती , हम रख भी नही सकते । इसलिऐ यह समज लो तुम ही अनाथ हो । कोई नही तुम्हारा दुनिया में ।" 5 इससे स्पष्ट होता हे कि, उसका तिरस्कार ही कीया जाता है। नाजबीबी के परिवार के लोग उसके शारीरिक कमी के कारण उसे अपने जीवन से निकाल देते है। परिवार के लोग भी उसे अनाथ कहने लगते है। शारीरिक कमी के कारण ही समाज ने भी हमेशा सेही हीन दृष्टी से देखा गया है। इस उपन्यास में नाजबीबी जैसे अन्य पात्र जैसे , सकीना, अकमर, छैलू, मंजू की तरह कितने और है जो अपने माँ-बाप परिवार से अलग होने का दु:ख झेल रहे है। मंजू के शब्दों में देखा जाये तो , " माँ-बाप भी कोई भुलने की चीज है? पर मजबुरी में भुलना पडता है... ऐसा न भगवान किया होता तो क्यों ये दिन देखते हम? " 6 इससे पता भी चलता है कि , कितना दु:ख और मानसिक पीडा झेल रहते है किन्नर लोग ।

यदि किन्नर के परिवार वाले भावनाओ के आवेग मे आकर अपने किन्नर संतान को पुनर: अपना ना चाहते है तो वह, इतना दूर जा चुका होता है की वापस परिवार मे आना असंभवही हो जाता है। 'यमदीप' इस उपन्यास मे नीरजा माधवजीने इस स्थिती में ने इस रिश्ते मे हिजडो के गुरु मेहताब जी ने नाजबीबी के पिता को समजाते हुए तथा यथार्थ स्थिती का बोध कराते हुए किन्नर जीवन का दर्द, किन्नर जीवन को दर्द, त्रासदी को बया करते हुए कहते हैं "आप इस बस्ती में रह नही सखते बाबुजी और अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नही सकते... दुनिया में बदनामी और हँसी -हँसारत के डर से। हिंजडि के बाप कहलाना न आप बरदाश्त कर पायेंगें और न आपके परिवार के लोग। लूली-लंगडी होती यह, कानी- कोतरी होती, तो भी आप इसे आपने साथ रख सकते थे... इसलिए इसे अब इसके हाल पर छोड दीजिए। यही उसका भाग्य था, यही बदा था... सोच लीजिए, मर गई, सब्र कर लिया ।"7 इस तरह देखा जाता है कि सामाजिक बहिष्कार नाजबीबी जेसों की नियती के रूप में स्वीकार हो जाता है। किन्नरों के लिए शिक्षा की कल्पना बेमानी लगती है। सामाजिक असुरक्षा और स्थायित्व के

अभाव भी देखने को मिलता है। 2014 से पहले तक किन्नरों को अपनी पहचान से इतर इतर स्त्री या पुरुष के रूप मे विद्यालय मे दाखिला लेना पडता था लेकिन भेद खुल जाने का भय हमेशा परिवार को सताता रहता था। यमदीप उपन्यास मे महताब गुरु के इस कथन से साबित होता है, कि हिजडा समुदाय के लिए शिक्षा डोर की कौडी साबित होती है, " किसी स्कूल मे आज तक किसी हिजडो को पडते हुए देखा है? किसी कुर्सी पर हिजडा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलक्टरी में... किसी में भी?"8 इससे भी स्पष्ट रूप मे देखा जाता है की, हमारे समाज मे किन्नरो को शिक्षा के लिए भी संघर्ष करना पडता है।

'यमदीप' इस उपन्यास में नीरजा माधव ने अपने इस उपन्यास के प्रमुख पात्र नाजबीबी की माँ की मृत्यु के पश्चात उसकी अस्ति लाने से श्मशान जाती है तो किन्नर को श्मशान में देखकर एक और सारे लोग भौचक्का हो जाते है। एक व्यक्ती उनके मृत्यु के उपरांत की घटना को सुनाते हुए कहता है " सुना है, रात मे कब्र में गाड देते हैं, वह भी अपने ही बस्ती में। और उस पर... जूते- चप्पल से पिटते है, थूकते हैं और इस योनी मे दोबारा जन्म न लेने की बात कहते हैं।"9 इस कथन से दिखाई देता है कि, किन्नरो को समाज मे कितना हिंनता से देखा जाता है। उनकी मानसिक पीडा, दुःख, संघर्ष जीवन देखनें को मिलता है। आर्थिक स्तर पर विपन्न होने के बावजूद भी देशभक्ती, धर्मनिरपेक्षता आदी पर किन्नरों के विचार उन्हे और भी महान बना देते है। 'यमदीप' उपन्यास में नाजबीबी मानवी के प्रश्न के जवाब मे कहती है" अपने देश के लिए तो देखिए, हम लोग मर मिटेंगे। जिस तरह फौज में एक सिपाही भरती होता है, पुलीस होता है सरकार हमे भी हत्यार दे दे। मैं तो लडूँगी। लडते- लडते हिंदुस्तान की पीछे अपना जान दे दूंगी। बस, मेरी यह तमन्ना है। मैं मेजर की लडकी हूँ, मेजर की।"10 इस कथन से स्पष्ट हैं की, किन्नर एक ऐसा वर्ग है- जो मानवीयता के प्रतिकटिबद्ध होता है साथ ही उनमें राष्ट्रप्रेम भी देखने मिलता है । उपन्यास में नाजबीबी की भावना और विचारों को देखते हुए मानवी अंत मे फैसला करती हैं कि नाजबीबी का संकल्प चुनाव के खडे होने को मानती है। नाजबीबी देश के हित के लिए तत्पर मानवी को कहती है" जैसा कहोगी, मेंम सहाब, वैसा ही होगा। जो भी काम होगा, में जनता की भलाई के लिए करूंगी ,क्योंकी अपने तो आगे-पीछे कोई नही है जिसके लिए इस दुसरो की रोटीया छिनूंगी और अपना घर भरूंगी। जरूरत पडी तो भ्रष्ट लोगो के खिलाफ हत्यार भी उठाऊंगी। हर गंदगी को जड से साफ कर दूंगी। दुनिया मे शांती रहे, और क्या चाहिए किसी को?"11

नीरजा जी ने यमदीप उपन्यास में किन्नरो के रीती -रिवाज, उनकी भाषा शैली पर भी विस्तार से वर्णन किया है। उपन्यास की नायिका नाजबीबी मानवी को बताती है कि,"हम लोगों को बेसरा माता हैं यानी हिजडों की देवी। उनका मंदिर अहमदाबाद में है। वहीं गुजरात में। तो वर्ष में एक बार वहा हम सब लोग जुटते हैं। भंडारा करते हैं , नाचते- गाते हैं ।यानी एक-साथ दो चार दिन रहते हैं ।हर हर जिले में हम लोगों के एक गुरु होते हैं । हम लोग जो रोज कमाई करते हैं , उसका एक बडा हिस्सा बेसरा माता

के नाम पर गुरुजी के पास जमा कर जाते हैं। उसी में से सब मिलाकर हो जाता हैं। " 12 इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि किन्नरों का रीती -रिवाज के साथ ही उनकी देवता, उत्सव, कमाई का हिस्सा, उनकी प्रामाणिकता देखने को मिलती हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि सिर्फ जनानांग दोष के कारण किन्नर समुदाय को समाज से उपेक्षित किया जाना सही नही है ।यह किन्नर समुदाय भी हमारी तरह ही मानवीय संवेदना से जुडी है। इन्हें भी दु:ख, पीडा है। समाज से बहिष्कृत और परिवार से दूर रहकर जीना कितना मुश्किल होता है। किन्नर समुदाय को समाज का साथ न मिलने के कारण इनका जीवन दु:ख से भरा होत होता है ।इसकी हम कल्पना भी नही कर सकते।

'यमदीप' उपन्यास मे किन्नोरो के उद्दात्त चरित्र, कर्तव्यबोध ,मानवता, नैतिकता, संवेदनशील मन, कौटुंबिक भावना, राष्ट्रप्रेम तथा अपनी आराध्य बेसरा माता और अपने हिजडा गुरु की आज्ञा का पालन इन सभी क परिचय करता है। अत: जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह पारिवारीक हो, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हो हर क्षेत्र में इनके साथ अपनी सोच को बदलने की जरुरत है ताकि किन्नर समुदाय भी समाज एक सामान्य जीवन जी सकें।

संदर्भ :

1) नीरजा माधव : 'यमदीप' ,सुनिल साहित्य सदन , जटवाडा , दरियागंज , नई दिल्ली, संस्करण 2018, पृ.6
2) वही,पृ.13
3) वही,पृ. 42
4) वही,पृ .60
5) वही,पृ. 82
6) वही,पृ. 92
7) वही,पृ. 93
8) वही, 94
9) वही,पृ. 111
10) वही,पृ .163
11) वही,पृ. 288
12) वही,पृ .164